

दादर॥ वा॥ रा॥ गो॥ ना॥ द॥



मराहिने॥ राजारामने हेत॥ २७॥ शूद्र
कु॥ वेदादनी॥ मुषजिभ्याकरिध॥ २८॥
यादरसनश्चानकौ॥ जदाजाज्ञाज
हासिध॥ २९॥ विरछइडाददरी॥ मृत
तंदेवोश्चान॥ माटीछियेसोनैमिने॥ ज्ञानीकथिगएज्ञान
॥ ३०॥ परचकि॥ आषरी॥ सपजापथरासकेकाठ॥ मृततंदेव
श्चानके॥ परकौवाधैठा॥ ३१॥ उंचैवैठैसामनै॥ श्चानपु
जावैक॥ ३२॥ विनोवैठैमुषसदजदी॥ आवैनदीसमान॥ ३३॥

॥ २२ ॥ हे गदत हे नर नर ॥ फट फट कर ॥ ककर वै
 साद ॥ बाटन वनिये बुधनर ॥ २२ ॥ अथ मदी नित्ये पुजरी मिले ॥



यना वेटी सासुरजात ॥ दोहरा ॥ मदी
 नित्ये मदी मिले ॥ वेटी सासुरजात स
 व सुषरू है सौनिया ॥ तोहरा मकी घात
 ॥ २३ ॥ अथ विलेया कौ सु ॥ दोहरा ॥



सन मुष अथै सुष
 यनौ ॥ मुष मै नित्ये
 अहार ॥ सुगन रि

रीसोर॥४२॥



अथ टीट हीको लिखत॥ दोहरा॥ वाइवोलेअ
तिनली॥ वाइडुयकीमूल॥ सगुनटीटही
कोभलो॥ कहानजोककहाइ॥४२॥ अ
थजलकूकडीकोसुगन॥ दोहरा॥ पानीवा
हरेवोलेही॥ नदीतीरकेपार॥ जलवोलेन
लकूकडी॥ यहइसगुनविचार॥४३॥ अ
थस्यालसुसासिंघकोसुगन॥ दोहरा॥
वायोस्यालवायोसुसावायोनाहरेदष
मुषमार्गेसापायेहो॥ जोचाहेसोलेष॥ इति सुगनसिंघस्याल

सीगासको ॥ अथ हातीकोसुगननिषेत ॥ दादरा ॥ बालनहै



अतिदादने ॥ धरै कुंषपरसु
हु ॥ हाथीसगुनसाथीकह्यो
देखोग्रंथनदृष्ट ॥ ४५ ॥ पावउ



ठाबैदादनौ ॥ धरै कधपर
सुंउ ॥ हाथीसगुनसाथी
कह्यो ॥ देखोग्रंथनदृष्ट ॥
॥ ४६ ॥ इति हातीकोसगु
नसमापतिभया ॥ श्री ॥

अतीदिशरीकौदिना॥ वंजनवैठोकंजपर॥ ३५॥ अथबुलबुल
 कौसगुन॥ दोहरा॥ दाहनीबोलैलानअति॥ बाइसिधचरचा
 लापाछेबुलबुलबोलियो॥ तौजानौनिजकाल॥ ३६॥ चुनमुष
 मेसनमुषमितै॥ सनमुषकीजैगेन॥ प्यारीकहतश्चीनसै॥ स
 गुनैयाकौसौन॥ ३७॥ अथउटकौसुगन॥ दोहरा॥ वायोसुभ



लीजैसदा॥ असुनदाह
 नौहोइ॥ लंरघिचावल
 बलकरै॥ सुनौसयानैलो
 य॥ ३८॥ इतिलंरघिचा



अथ गौं उक्तौ सुगन ॥ दोहरा ॥ दोही रां भैरुति नली ॥ गाइ जु बाछी ला



न ॥ सोन सिराहत सोनिया सोन
नन के उनमान ॥ ३४ ॥ वांई आधी
राति पर ॥ रां म्हत सुनिये गाइ धनी
मरै कै देस पै ॥ पडै अचिंती थाडि ॥



॥ ४० ॥ अथा गाई नै सक्ठे छे डेत
कौ सुगन ॥ दोहरा ॥ मुहिषि वैल
कटाषडा ॥ चलत जु देखै कोर ॥ वी
सवि सै बसिका लेके ॥ नयो जान

लेया कौन लो ॥ मिलै कनक करतार ॥ **हरा ॥** बाये हरे ब्रह्म पे ॥ स
॥ **दोहरा ॥** वारवार बोलै दिवस ॥ उलै मन ले ॥ बाये असुन सु



पसं पत मिलै ॥ बोलै सुवासुष देव ॥

जदपि संध्या ॥ अथ सारो कौ सुगन ॥ **दो**

प्यारी कहत प्रांही बोलै अति मली ॥ सा

बालि ॥ **२६ ॥** न वास ॥ नुरत मिलावै मि



॥ **हरा ॥** पाछे करै सत्र कौ नास ॥ **३१ ॥**

बोल नु बोल ॥ सके ब्रह्म पर ॥ वाइसा

ही सगुन कौ मे गमन न की जै भवन से

अथ गौर्जको सगुन ॥ दोह



सनमुषवो लही ॥ सनमुषवै ठे देष
सुषसंपत दंपत मिलै ॥ सारसस
पुनविसेष ॥ २८ ॥ अथ सगुन मो

रको ॥ दोहरा ॥
दंपत सुषसंपत
मिलै ॥ नासत
घरकौ रोग ॥ च
सगुन सराहत मो
पुरनं ॥ श्री ॥ श्री



॥२८॥ अथ सुवाकौ सुगननिषेते ॥ दोहरा ॥ वायै हरे ब्रह्मपे ॥ स



नमुषसैमनते ॥ वायै असुभसु
नराहनै ॥ वोलै सुवासुषदेव ॥

॥३०॥ अथ सारौ कौ सुगन ॥ दो
हरा ॥ दांही वोलै अतिमली ॥ सा

रो सुषनिवास ॥ नुरतमिना वैमि
त्रको ॥ करै सत्रको नास ॥३१॥

सनमुषसूके ब्रह्मपर ॥ वाइसा
रो होइ ॥ गमननकी जै भवनसे

सुनो सयाने लोय ॥ ३२ ॥ अथ कपोतको सुगन ॥ दोहरा ॥



चुन्स कुरीदै वायै पग ॥ सुष
दिया वै अन्न ॥ सांचो सुगन
कपोतको ॥ लीजै मायौ मा
न ॥ ३३ ॥ अथ कोडीलाको

सुगन ॥ दोहरा ॥ वायो पाछे को अन्न ॥ हायो बोल सुबाल



कोडीलाके सुगनको ॥ नाही माल
अमाल ॥ ३४ ॥ सोरठा ॥ ह्यग यह
वरहरेत्रन पुन पुन फलेन छपर

सुचला रपला ज्ञान रगुलाञ्ज रविला रजे ॥ वायै सढ सुमदान ॥
 ॥४४॥ देहरा ॥ विनाधु रां पाचक ससा ॥ करकटयो रोहार ॥ वायो
 नाम सारत सुवा ॥ डैकर चात्रक सोऽ ॥ ५५ ॥ ॥ पुज उजरे कपरा



लिनै ॥ मिले जे वायोञ्जान
 रावञ्जै सिधक हतै ॥ सु
 गनमरा फल जान ॥ ५६ ॥



अथ दुजरात॥ महर को चरकनस को सुगना॥ दोहर॥ जून कल



सतावौ कलस॥ महर
को चरीरंग॥ कछन॥
मिन पुत्र तिये॥ दाहिन
नैने उचतुरंग॥ थर॥
अथ निरपतुरंग अस
वार अथ वा वाजे अथ



वागनका को सुगना॥ दोहरा॥ दध दौना कर मोरगा निरपतु
रंग असवार वाजनि साने गनका त्रिया हदा दनै सुगसा



अथ श्वानसिंघसी गोसलोष गधवकौ सुगना ॥४७॥ दोहरा



श्वानसिंघसी
गोसपुनलोष
शगधवसोऽ॥
वायै च तनतजा
वोत्तही ॥ सुग
नमदाफलहो
॥४८॥ अ

थतीतरदेसियकागकौ सुगना ॥ दोहरा ॥ तीतुरदेवियर्कगुन